Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume-5 | Issue-2 | March-2015
Available online at www.isrj.org

प्रेक्टिस टीचिंग की गुणवत्ता सुधार में शिक्षक-प्रशिक्षक की भूमिका

धीरज आर. परमार
(आनंद एज्युकेशन कॉलेज, आनंद)

सारांश

वक्त को हम पकड नहि सकते, रोक नहि सकते, पीछे हटा नहि सकते। वक्त का हम उपयोग करे या ना करे वो चलता रहता है । बहते रहना वक्त का स्वभाव है। काल अखंड है। पल, मिनट, घंटा, दिन, महिना, साल, शताब्दी और मिलेनियम ये सब मनुष्य की व्यवस्था है। इक्कीसवी सदी का दूसरा दशक भी शुरु हो गया है । इस वक्त शिक्षक-प्रशिक्षण में प्रेक्टिस टीचिंग की गुणवत्ता के बारे में सोचने की आवश्यकता खडी हुई है यही बताताहै कि गुणवत्ता में कुछ कभी है, कुछ त्रुटियाँ है। हमारी गुजरात सरकार भी चिंतन शिविरो में शिक्षकों को गुणवत्ता के बारे में समझा रही है। इस वक्त शिक्षक-प्रशिक्षण संस्था की कमी नहीं है लेकिन गुणवत्ता के बारे में स्थिति अच्छी नहीं है। शिक्षक-प्रशिक्षण संस्था में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षक की व्यावसायिक क्षमता और समृद्धि के बारे में सोचना अति आवश्यक है। प्रशिक्षणार्थी के द्वारा हजारो छात्रों में परोक्ष रुप से शिक्षक प्रशिक्षक की असर होती है इसलिए प्रशिक्षक की गुणवत्ता, अध्ययन, पढाई, चिंतन औरकार्यप्रणालि के बारे में सोचना चाहिए। शिक्षक-प्रशिक्षण में अध्यापक पाये का पत्थर है । शिक्षक-प्रशिक्षक की गुणवत्ता ही अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता है। अध्यापक अच्छी तरह से पढाई करने वाला, अपने विषय में निपुण, प्रयोगशील, सर्जनशील, विधायक दृष्टि से सोचने वाला, विद्यानुरागी, पद्धति-प्रयुक्ति को जानने वाला, गलती का स्वीकार करनेवाला, निरोगी और निर्व्यसनी होना चाहिए। ऐसे अध्यापको की उपस्थिति में शिक्षक-प्रशिक्षण और प्रेक्टिस टीचिंग की गुणवत्ता में कुछ कमी नहीं रहेंगी। अध्यापक समृद्ध, समजदार, सरल, समर्थ और सक्षम हो तो प्रशिक्षणार्थी भी इसी तरह तैयार रहेंगे।

चावीरुप शब्द- इक्किसवीं सदी, शिक्षक-प्रशिक्षण, शिक्षक-प्रशिक्षक की गुणवत्ता, प्रशिक्षण की असर

प्रस्तावनाः

हम सब इक्किसवी सदी के दूसरे दशक में है। विज्ञान और तकनीकि की वजह से मानव जीवन में बहुत परिवर्तन हो रहा है । रहन-सहन, खान-पान, कपडे, त्यौहार मनाने की तराह में भी परिवर्तन हो रहा है । विज्ञानने हमारे बाह्य जीवन में बहुत परिवर्तन किया है । बहारसे समृद्ध दिखता हुआ मनुष्य अंदर से एकदम खाली है। रास्ते और माकन बडे हो रहे हैं लेकिन दिल के रास्ते छोटे होते जा रहे हैं। मनुष्य सुनने औरहंसने को भूलता जा रहा है । मानव जीवन में आये हुए परिवर्तन से शिक्षा क्षेत्र भी बाकात नहीं है। दिन-प्रतिदिन शिक्षा संस्था में वृद्धि हो रही है। शिक्षक-प्रशिक्षण संस्था भी पिछले पांच सालो में बहुत हो गई है । उसमें स्वनिर्भर संस्थाए बहुत है । शिक्षक-प्रशिक्षण संस्था की पहचान उसकी भौतिक संपदा से नहीं होती लेकिन उसमें पढानेवाला अध्यापक कैसा हे उस पर है ।

प्रेक्टिस टीचिंग की गुणवत्ता सुधार में शिक्षक-प्रशिक्षण की भूमिका

- विनयन, वाणिज्य और विज्ञान में स्नातक-अनुस्नातक छात्रो शिक्षक बनने की तमन्ना लेकर शिक्षक-प्रशिक्षण संस्था में दाखिल होते है। अभी तो अध्यापक शिक्षा में छात्रों की कमी हो रही है। कइ संस्था में पुरी मात्रा में छात्र नहीं मिलते है। दस महिने में प्रशिक्षणार्थी शिꣳा देने के लिये तैयार होते है। प्रशिक्षक की वजह से प्रशिक्षमार्थी के वर्तन, व्यवहार, जीवन दृष्टि और सोचने में सही रुप से परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन के लिये अध्यापक बहुत कोशिश करता है। अध्यापक शिक्षा संस्था उसके मकान से नहीं जानी जाती लेकिन उसमें कार्यरत समृद्ध अध्यापक की पहचान से अपना स्थान बनाती है ।

- सरल, सहज, सक्षम और समर्थ अध्यापक शिक्षक-प्रशिक्षण में बहुत आवश्यक है। अध्यापक का काम करना और काम करवाने का प्रभाव प्रशिक्षणार्थी पर जरूर होता है । प्रशिक्षक का सरल, सहज, निःस्वार्थ और सस्नेह व्यवहार से प्रशिक्षणार्थी का व्यक्तित्व बनता है । प्रशिक्षक का बिनशरती प्रेम प्रशिक्षणार्थी को अंदर से समृद्ध करता है । पूर्वग्रह रहित प्रशिक्षक अच्छी तरह से शिक्षा का काम कर सकता है ।

- अच्छी तरह सेपढाई करनेवाला अध्यापक अलग अंदाज से सोचता है। पढाई की वजह से मनुष्य की सोचने की प्रक्रिया तेज होती है। अलग सोचना और जीवन में उसकापालन करने से अध्यापक अपने छात्रों को भी प्रकाश के राह में लाते है । अपनी अच्छी बोली से, सोच से और वर्त से प्रशिक्षणार्थी के सामने श्रेष्ठ शिक्षक का उदाहरण रखता है । तत्वज्ञानी प्लेटो के उत्तर अनुसार जिसको हरेक प्रकार के ज्ञान में रस है, जिसको कुछ सीखने की अभिलाषा है और जो कभी भी तृप्त नहीं होता वो तत्वज्ञानी कहा जाता है। प्रशिक्षक की ऐसी फिलसूफी से प्रशिक्षणार्थी भी प्रभावित होते है।

- प्रयोगशील, सर्जनशील और विधायक दृष्टिवाला प्रशिक्षक अपने प्रशिक्षणार्थी को भी शिक्षा यात्रा में हिस्सेदार बनाता है । इस वक्त हमारे वर्गखंड में छात्रों की संख्या बढती जा रही है तब प्रशिक्षक छात्रो को पढाने की पद्धति, प्रयुक्ति और कुछ सामग्री का निर्माण करने की कला अपने प्रशिक्षणार्थी को सीखाते है। प्रवृत्ति द्वारा पढाई के बारे में प्रशिक्षक प्रशिक्षणार्थी को मार्गदर्शन देता है। वर्गखंड में और समाज में जो प्रश्न खडे होते है उसका सही उत्तर ढूंढने के लिये संशोधन करना भी प्रशिक्षक प्रशिक्षणार्थी को सीखाता है। पढाई के साथ मूल्यशिक्षा की बात भी प्रशिक्षक दिखाता है। मूल्यशिक्षा की आज बहुत आवश्यकता है । इस तरह से प्रशिक्षणार्थी को तैयार करके प्रशिक्षक द्वारा समाज में अच्छे शिक्षक उपलब्ध होते हैं।

- निरोगी और निर्व्यसनी प्रशिक्षक से शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता बढती है। निरोगी तन में निरोगी मन रहता है । खाने-पीने में विवेकी, सदा हसनेवाला, सदा प्रसन्न प्रशिक्षक प्रशिक्षणार्थी को भी तन से और मन से स्वस्थ रखता है।निरोगी, निर्व्यसनी और प्रसन्न प्रशिक्षक की उपस्थिति से वातावरण भी प्रशन्न होता है । प्रशिक्षक की पसंदगी में निर्व्यसनी को विशेष अंक मिलने चाहिए सभी व्यवस्था करनी चाहिए।

- अंतरदर्शन करनेवाला प्रशिक्षक अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता को सो प्रतिशत बढाता है। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य अपे बारे में सोचे, अपने अस्तित्व का उत्सव मनाए, गलती को ढूंढे, गलती का स्वीाकर करे, में जो कह रहा हूँ यही सच है ऐसी सोच दूर करे, अलग सोचनेवाला अलग है ये सोच भी दूर करे, बाहर के नहीं लेकिन अंदर के रहस्य को ढूंढे ये अत्यंत आवश्यक है। दिन-प्रतिदिन अच्छे बनने का प्रयास करनेवाला प्रशिक्षक प्रशिक्षणार्थी को भी इस तरह तैयार करता है। भीतरकी यात्रा करनेवाला प्रशिक्षक प्रशिक्षणार्थी को भी इस राह में चलने कोसीखाता है । ताकत पैसो में और बाह्य जगत में नहीं हैलिकिन ताकत मनुष्य की भीतर है । ऐसी ताकत को पहेचानना, विकसीत करना और अभिव्यक्त करना ये भी प्रशिक्षक प्रशिक्षणार्थी को सीखाता है। प्रशिक्षक अपने आत्मविश्वास, सोचने की क्षमता, जझबात, कल्पना शक्ति, बोलने की दौडने की, चलने की, हसने की शक्ति के माध्यम से कुछ श्रेष्ठ करता है उसकी विधायक असर प्रशिक्षणार्थी पर अवश्य होती है। प्रशिक्षक अपनी शब्द शक्ति के माध्यम से संस्था में प्रेम, शांति और आनंद का निर्माण करता है जो शिक्षक-प्रशिक्षण और प्रेक्टिस टीचिंग की गुणवत्ता में अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भसूचिः

1. शाह, गुणवंत, शिक्षा दर्शन. (७मी आवृत्ति-२००८-०९)अहमदाबादः बी.ए.स. प्रकाशन
2. पटेल, मोतीभाई,(२००५) भारत में शिक्षा प्रणालि का विकास, अहमदाबादः. बी.ए.स. प्रकाशन ।
3. बीजलीवाला, आइ.के., (२००८), मोतीचारो, बंबईः इमेज प्रकाशन प्रा.लि.।
4. सास्त्री जयेन्द्र, शिक्षा की तात्विक और समाजशास्त्रीय आधारशिलाए, अहमदाबादः, बी.एस. प्रकाशन।
5. पटेल, सुरेश, (२००५) आंबीए उंचे आसमान को, अहमदाबादः मानवविकास केन्द्र।